रात्रीक्लास 20-2-68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बहुत कर के कहते हैं ईश्वर को भावी। ऐसा कोई नहीं होगा जो कहे ड्रामा की भावी। बनी-बनाई इसको भी भावी कहेंगे। वह बनी-बनाई ईश्वर को कहेंगे। अभी यह ड्रामा किसका बना हुआ है। ऐसे नहीं कह सकते ईश्वर का बनाया हुआ है। प्रश्न उठेगा कि कब बनाया। ड्रामा बना हुआ है। इसको कहते हैं अनादी। ऐसे नहीं ईश्वर ने अनादी ड्रामा बनाया। ईश्वर ने बनाया तो पूछेंगे कैसे बनाया। कहते हैं बनी बनाई है तो ड्रामा ठहरा। ज्ञानको समझने से फिर कोई प्रश्न पूछे तो समझाना पड़ता है। जो प्रश्न का उत्तर नहीं देते हैं तो कहना चाहिए अजन इस पाईन्ट परसमझाया नहीं है। तुम्हारा इन में क्याफायदा। मुख्य फायदे की बात है मन्मनाभव। आत्मा को प्युर बनाना है यह है मुख्य बात। बाकी प्रश्न का उत्तर नहीदे सकते हैं तो टाईम है। बापकहते हैं ना आज तुमको गुह्य बातें सुनाता हूं। मुख्य बात है पावन बनने की। जिसके लिए हो पुकारते हैं पतित-पावन सीताराम। और कोई बात समझ में न आती है यह जरूर समझ में आती है। इसमें संशय की बात नहीं। तो पहले यह बुधि में बिठाना चाहिए सभी कहते हैं हे पतित-पावनआओ। मूल इन से काम है। बाकी कुछ पूछे बोलो यह ड्रामा बना हुआ है। इस समय यहां तक ही समझाया है। बाबा ने कहा है यह प्रश्न बाहर जो मनुष्य आपे ही पूछे, आपे ही समझे हम नर्कवासी हैं या हम स्वर्गवासी हैं। पतित हैं या पावन हैं। युक्तियां निकालनी होती है मनुष्य कैसे मिलकर जो पकड़ा जाये। ट्रेन में भी यह दे सकते हैं। प्रश्न पूछनेवाले जानते हैं तब तो पूछते हैं। तुम हो सब टीचर्स। रास्ता बताने वाले पण्डे भी हो। तुम अपने को ब्राह्मण कहेंगे तभी भी समझेंगे थोड़े ही। समझते थोड़े ही हैं ब्रह्मा कुमारियां ब्रह्मा के हैं। तुम न काले हो, न गोरे हो। न चीनी हो न जापानी हो। तुम जैसे कि नये हो इस भारत पर। तुम इस दुनिया के आदि, मध्य, अन्त को जानते हो, तुमको कोई नहीं जानते हैं। ब्राह्मण तो ढेर हैं। तुम्हारे चित्र हो ऐसे हैं जो कब किसकी बुधि में बैठ न सके। जब कोई भी आवे तो पूछो तुम इस 84 के चक्कर को जानते हो। पूछते हैं तो जरूर जानते होंगे ना। बच्चे समझते हैं बड़ी भारी संगम के बीच में हो। इन सभी बातों को तुम अभी संगम युगपर ही समझते हो। यह संगम युग है। सतयुग में नालेज की दरकार नहीं रहती है। सत्य नर से नारायण बनने बनने की अभी तुम सच्ची गीता सुना रहे हो। पाईन्ट तो बहुत अच्छी है। नर जो नारायण सतोप्रधान था वह पुनर्जन्म लेते2 तमोप्रधान बन गये हैं। सतोप्रधान को गोरा, तमोप्रधान को सांवरा कहेंगे। यह सब को असर पड़ना चाहिए। ऐसी2 सहज बातें छपाना ठीक है। अभी तुम जानते हो हम यह बनने वाले हैं। मंदिर में भी जाकर युक्ति से समझाना पड़े। यहस्वर्गवासी हैं या नर्कवासी हैं? पुनर्जन्म तो जरूर लेना पड़े। अभीकलियुग का अन्त है। सभीपतित हैं। कितना क्लीयर है। अच्छा बच्चों को मात-पिता बापदादा का याद प्यार गुडनाईट। नमस्ते।

रात्रीक्लास, - ओमशान्ति 21-2-68

बाहर से सर्विस समाचार आता है। यहां फिर है मधुवन की मुरली। जिसको सिर्फ ब्रह्मा-ब्रह्माकुमारियां ही नम्बरवार समझती हैं। अभी तुम समझते हो हम मालिक थे। हमारा राज्य था। आधा कल्प राज्य किया फिर माया ने छीन लिया। फिर बाबा आकर माया परजीत पहनाते हैं। फिर तुम जगत के मालिक बन जाते हो। तुम बच्चों को तो है हम जीत पाते हैं और हारते हैं। हराते कैसे हो, जीतते कैसे कैसे हो यह भी समझते हो। गाते भी हैं ना माया ते हारे हार है ..... परन्तु जानते नहीं हैं। तुम्हारी बुधि में है आधा कल्प हम देवी-देवताओं ने राज्य किया फिर माया के राज्य में हरा दे दिया। हम राज्य करते थे। 84 जन्म पूरे होते हैं फिर हम जीत पहनते हैं। लड़ाई आदि है नहीं। बाप सिर्फ कहते हैं तुम माया के कारण पतित बने हो। अभी मुझे याद करो तो पावन बनेंगे। विकर्म भी विनाश होंगे। अभी जितना जो देवीगुण धारण करे और आप समान बनावे।

म्युजियम, प्रदर्शनी का नाम भी बदल जायेगा एकदिन। जो क्लीयर नाम होगा वह बदली करेंगे

समझाने लिए। फिर भी पढ़ते हैं। दिन प्रति दिन नई2 पाईन्टस समझाई जाती है। सतोप्रधान से तमोप्रधान कैसे बने हैं वह भी समझाना पड़े। 84 जन्म लेते2 तमोप्रधान बने हैं। फिर अभी सतोप्रधान बनने लिए याद की यात्रा। यह है रोयल यात्रा। वह भक्ति मार्ग की यात्रा, यह है ज्ञान मार्ग की यात्रा। फिर जाकर फिर राजधानी में आना है। वह तो यहां ही धक्के खाते रहते हैं। अ ह को अपना अपना राज्य था। श्री मत पर लिया था। फिर माया ने हराया। हरेक की बुधि में यह याद रहे तो नशा रहेगा। हम युध के मैदान में है। अभी तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। यह तो जैसे सहज बात हो गई है राज्य लेना और गंवाना। दुनिया को पता नहीं है हम कैसे हराते हैं। बाप ने समझाया है माया भी शक्तिवान है। इस समय तुम बाप को याद करने से शक्ति पाते हो माया पर जीत पाने को। आयु भी बड़ी होती है। पवित्रता भी है। भेट की जाती है कलियुग और सतयुग की। भेट भी संगम पर की जाती है। बाप संगम युग पर ही आते हैं। जो संगम युग पर नहीं होते वह भेट को जानते ही नहीं। यह तो तुम ही समझा सकते हो। करोड़ों मनुष्य हैं। उन में से भाला कितनी छोटी बनती है। ऊंच इम्तहान में थोड़े ही पास होते हैं ना। यहां भी ऐसे हैं। भाला नम्बरवार बनती है। फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड। थर्ड प्रजा को कहेंगे। तुम को ई से भी लिखते में पूछ सकते हो। पहले तुम कैसे बेबीयां थे। आस्ते2 अब पढ़ते जाते हो, समझाते जाते हो। मेहनत तो लगती है ना। आत्मा को 84 जन्म कैसे लेनीपड़ती है। कितनी छोटी आत्मा है। उन में ड्रामा का पार्ट भरा हुआ है। बातें तो बहुत सहज है समझने की। बाप जो समझाते हैं वही राईट है। हम भारतवासी राजाई में थे ना। अभी आयरन एजेड में आ गये हैं। फिर जरूर गोल्डेन एजेड के बनेंगे। तुम लिखते भी ऐसे हो। तुम देवताओं के पुजारी हो तो जरूर देवता धर्म के हो ना। सिर्फ देवता क्यों नहीं समझते हो क्योंकि पतित बन पड़े हो। गाड़ वही है सिर्फ तमोप्रधान बन गई है। यह खेल है ही पवित्र अपवित्र ..... का। पतित जब बनते हैं तो पतित-पावन बाप को बुलाते हैं। हे बाबा आकर हम पतितों को पावन बनाओ। शिव बाबा का नाम भी है। वह निराकार है। परन्तु शिव जयन्ति कहा जाता है तो जरूर यहां आते हैं ना। बाप कहते हैं मैं तो इन में प्रवेश कर तुमको रास्ता बताता हूं। मेरा पार्ट ही है नर्कवासी को स्वर्ग वासी बनाना। पराये देश पतित तन में आता हूं। यह पढ़ाई है। पढ़ाई से पद होगा। बाप ही आकर रास्ता बताते हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको राजयोग सिखलाने आया हूं। तो मेरी श्रीमत पर चलो। इस समय ही मेरा पार्ट है। फिर सतयुग में तो सुख तुमको मिलनी ही है। इसमें गुप्त मेहनत है। स्मृति आई है हम विश्व के मालिक बनते हैं। तो खुशी रहनी चाहिए ना। माया पर जीत पानी है। योगबल का अर्थ है याद। याद में भी बैठो। स्वदर्शनचक्रधारी भी बनते हो स्वधर्म में भी टिकते हो। चक्कर को भी याद करना है। अपने को अशरीरी आत्मा भी समझना है। आत्मा में ही यह ज्ञान ठहरता है। समय आ जाता है तो फिर कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे। अभी टाईम है। याद की यात्रा में जाने का। बाप की याद में रहने से ही जंक निकलती जावेगी। बहन भाईसे भी पार जाना चाहिए। इसमें क्रिमनल एसाल्ट न होगा। फिर इन से भी इनको आत्मा समझाना है। शरीर से भी निकल जाना है। नंगे आये थे नंगे जाना है। कोई भी चीज़ का आवरन न हो। आवाज़ से भी पार जाना है। हम जाते हैं अपने धाम। जैसे वह पार्ट बजा कर घर चले जाते हैं। यह है बेहद की बात। अशरीरी आये फिर यहां आकर पार्ट बजाया फिर अशरीरी हो जाना है। मुक्तिधाम में जाने, जीवनमुक्ति में आने की नालेज तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानते हैं।

***